रविवार 14 मार्च, 2021

विषय — पदार्थ

स्वर्ण पाठः **मत्ती** 6 : 33

"पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 23 : 1-6**

1 यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।
2 वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है;
3 वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गो में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।
4 चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है॥
5 तू मेरे सताने वालों के साम्हने मेरे लिये मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।
6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 37 : 3-5

3 यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर; देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह।
4 यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा॥
5 अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; और उस पर भरोसा रख, वही पूरा करेगा।

2. 2 राजा 4 : 1-7

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

1 भविष्यद्वक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा, तेरा दास मेरा पति मर
गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था वह आया है
कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए।
2 एलीशा ने उस से पूछा, मैं तेरे लिये क्या करूं? मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है? उसने कहा, तेरी दासी
के घर में एक हांड़ी तेल को छोड़ और कुछ तहीं है।
3 उसने कहा, तू बाहर जा कर अपनी सब पड़ोसियों खाली बरतन मांग ले आ, और थोड़े बरतन न लाना।
4 फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बन्द कर के उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना, और
जो भर जाए उन्हें अलग रखना।
5 तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जा कर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके
पास बरतन लाते गए और वह उण्डेलती गई।
6 जब बरतन भर गए, तब उसने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक और भी ले आ, उसने उस से कहा, और
बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया।
7 तब उसने जा कर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। ओर उसने कहा, जा तेल बेच कर ऋण भर दे; और
जो रह जाए, उस से तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना।

3. यिर्मयाह 29 : 11-13

11 क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानी की
नहीं, वरन कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा।
12 तब उस समय तुम मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा।
13 तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।

4. यूहन्ना 6 : 3-14, 26, 27 (*से* :), 29 (इस), 37, 38, 41 (*से 1st* ,), 42, 43, 47, 48, 63

3 तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने चेलों के साथ वहां बैठा।
4 और यहूदियों के फसह के पर्व निकट था।
5 तब यीशु ने अपनी आंखे उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलेप्पुस से कहा, कि
हम इन के भोजन के लिये कहां से रोटी मोल लाएं?
6 परन्तु उस ने यह बात उसे परखने के लिये कही; क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या करूंगा।
7 फिलेप्पुस ने उस को उत्तर दिया, कि दो सौ दीनार की रोटी उन के लिये पूरी भी न होंगी कि उन में से हर
एक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए।
8 उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहा।

9 यहां एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और दो मछिलयां हैं परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं?
10 यीशु ने कहा, कि लोगों को बैठा दो। उस जगह बहुत घास थी: तब वे लोग जो गिनती में लगभग पांच हजार के थे, बैठ गए:
11 तब यीशु ने रोटियां लीं, और धन्यवाद करके बैठने वालों को बांट दी: और वैसे ही मछिलयों में से जितनी वे चाहते थे बांट दिया।
12 जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उस ने अपने चेलों से कहा, कि बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए।
13 सो उन्होंने बटोरा, और जव की पांच रोटियों के टुकड़े जो खाने वालों से बच रहे थे उन की बारह टोकिरयां भरीं।
14 तब जो आश्चर्य कर्म उस ने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे; कि वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है।
26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए।
27 नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है।
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया; परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो।
37 जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।
38 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।
41 सो यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे।
42 और उन्होंने कहा; क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं, जिस के माता पिता को हम जानते हैं? तो वह क्योंकर कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूं।
43 यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि आपस में मत कुड़कुड़ाओ।
47 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है।
48 जीवन की रोटी मैं हूं।
63 आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं।

5. मत्ती 6: 24-26 (*से.*), 34 (*से 1st.*)

24 कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर ओर दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; “तुम परमेश्वर और धन दोनो की सेवा नहीं कर सकते”।

25 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?
26 आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है।
34 सो कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुख बहुत है॥

6. फिलिप्पियों 4 : 4-7

4 प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो।
5 तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो: प्रभु निकट है।
6 किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख अपस्थित किए जाएं।
7 तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरिक्षत रखेगी॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 275 : 10-15

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं।

2. 468 : 17 (पदार्थ)-22

पदार्थ वह है जो अनादि है और कलह और क्षय से असमर्थ है। सत्य, जीवन और प्रेम पदार्थ हैं, क्योंकि इब्रानियों में इस शब्द का उपयोग होता है: “विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।" आत्मा, मन, आत्मा या ईश्वर का पर्यायवाची एकमात्र वास्तविक पदार्थ है।

3. 301 : 17-29

जैसा कि ईश्वर पदार्थ है और मनुष्य ईश्वरीय छवि और समानता है, मनुष्य को आत्मा के पदार्थ की इच्छा करनी चाहिए, केवल पदार्थ की, न कि पदार्थ की और वास्तव में उसने ऐसा किया है। यह विश्वास कि मनुष्य के पास कोई अन्य पदार्थ या मन है, आध्यात्मिक नहीं है और पहले आज्ञा को तोड़ता है, आप एक ईश्वर को, एक मन को स्वीकार करेंगे। नश्वर मनुष्य खुद को भौतिक पदार्थ लगता है, जबकि मनुष्य "छवि" (विचार) है। भ्रम, पाप, बीमारी और मृत्यु भौतिक अर्थों की झूठी गवाही से उत्पन्न होती है, जो कि अनंत आत्मा की केंद्रीय दूरी के बाहर एक निश्चित दृष्टिकोण से, मन और पदार्थ की एक उलटी छवि प्रस्तुत करता है और सब कुछ उल्टा हो जाता है।

4. 139 : 4-9

शुरुआत से लेकर अंत तक, पवित्रशास्त्र आत्मा, मन की बात की विजय से भरपूर है। मूसा ने मन की शक्ति को उसके द्वारा सिद्ध किया, जिसे पुरुषों ने चमत्कार कहा; तब यहोशू, एलिय्याह और एलीशा ने किया। संकेत और चमत्कार के साथ ईसाई युग की शुरुआत हुई।

5. 591 : 21-22

चमत्कार। जो दैवीय रूप से स्वाभाविक है, लेकिन उसे मानवीय रूप से सीखना चाहिए; विज्ञान की एक घटना।

6. 134 : 31-1

एक चमत्कार भगवान के कानून को पूरा करता है, लेकिन उस कानून का उल्लंघन नहीं करता है। वर्तमान में यह तथ्य चमत्कार से अधिक रहस्यमय प्रतीत होता है।

7. 509 : 20-28

तथाकथित खनिज, सब्जी, और पशु पदार्थ अब समय या सामग्री संरचना से अधिक आकस्मिक नहीं हैं, जब वे "सुबह के सितारे एक साथ गाते थे।" मन ने पृथ्वी में होने से पहले "खेत का पौधा" बनाया। आध्यात्मिक स्वर्गारोहण के काल मन की रचना के दिन और मौसम हैं, जिसमें सौंदर्य, उदात्तता, पवित्रता, और पवित्रता - हाँ, दैवीय प्रकृति - मनुष्य में प्रकट होती है और ब्रह्मांड कभी गायब नहीं होता है।

8. 257 : 6-11

सिद्धांत यह है कि आत्मा एकमात्र पदार्थ नहीं है और निर्माता पैंटीहिस्ट हेटरोडोक्सी है, जो बीमारी, पाप और मृत्यु में सिद्ध होता है; यह एक शारीरिक आत्मा और एक भौतिक मन में विश्वास है, एक आत्मा जो शरीर और एक मन द्वारा शासित है। यह धारणा उथली पैंटीवाद है।

9. 281 : 27-1

दिव्य विज्ञान नई शराब को पुरानी बोतलों में नहीं डालता है, आत्मा को सामग्री में, न ही अनंत में। जब हम आत्मा के तथ्यों को समझ लेते हैं, तो भौतिक वस्तुओं के बारे में हमारे झूठे विचार नष्ट हो जाते हैं। पुरानी मान्यता को खत्म किया जाना चाहिए या नया विचार फैलाया जाएगा, और प्रेरणा, जो हमारे दृष्टिकोण को बदलने के लिए है, खो जाएगी।

10. 91 : 16-21

भौतिक स्वार्थ में लीन हम विचार और प्रतिबिंबित करते हैं, लेकिन जीवन या मन के प्रति पदार्थ को फीका करते हैं। भौतिक स्वार्थ का खंडन, मनुष्य की आध्यात्मिक और शाश्वत व्यक्ति के विवेक को प्रभावित करता है, और पदार्थ से प्राप्त गलत ज्ञान को नष्ट कर देता है या जिसे भौतिक इंद्रियां कहा जाता है।

11. 66 : 6-16

परीक्षण नश्वर लोगों को एक भौतिक कर्मचारियों और एक टूटी हुई ईख पर झुकना नहीं सिखाते हैं, जो हृदय को छेदता है। हम आनंद और समृद्धि की धूप में इसे याद नहीं करते। दु:ख लाभकारी है। महान क्लेश के माध्यम से हम राज्य में प्रवेश करते हैं। परीक्षण परमेश्वर की देखभाल के प्रमाण हैं। भौतिक विकास की उम्मीदों की मिट्टी में बोए गए बीज से आध्यात्मिक विकास अंकुरण नहीं करता है, लेकिन जब ये क्षय होता है, तो प्रेम आत्मा के ऊंचे उत्साह का प्रचार करता है, जिसमें पृथ्वी का कोई दाग नहीं होता है। अनुभव के प्रत्येक क्रमिक चरण में ईश्वरीय अच्छाई और प्रेम के नए विचार सामने आते हैं।

12. 92 : 32-9

क्या आप कहते हैं कि समय अभी तक नहीं आया है जिसमें आत्मा को पर्याप्त रूप से पहचानना और शरीर को नियंत्रित करने में सक्षम होना चाहिए? यीशु को याद करें, जिन्होंने लगभग उन्नीस सदियों पहले आत्मा की शक्ति का प्रदर्शन किया था और कहा था, "जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा", और यह भी कहा, "परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे।" "अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी उद्धार का दिन है," पॉल ने कहा।

13. 195 : 11-16

हर एक को तय करने का बिंदु यह है कि क्या यह एक नश्वर मन है या एक अमर मन है, जो एक कारण है। हमें तत्वमीमांसा विज्ञान और इसके दिव्य सिद्धांत के लिए पदार्थ के आधार का त्याग करना चाहिए।

जो कुछ भी अपने सिद्धांत द्वारा शासित एक विचार की झलक प्रस्तुत करता है, विचार के लिए भोजन प्रस्तुत करता है।

14. 201 : 1-9

सबसे अच्छा उपदेश जो सत्य का उपदेश है, वह पाप, बीमारी और मृत्यु के विनाश द्वारा प्रचलित और प्रदर्शित किया जाने वाला सत्य है। यह जानकर और यह जानकर कि एक स्नेह हम में सर्वोच्च होगा और हमारे जीवन में अग्रणी होगा, यीशु ने कहा; "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता।"

हम झूठी नींव पर सुरक्षित रूप से निर्माण नहीं कर सकते। सत्य एक नया प्राणी बनाता है, जिसमें पुरानी चीजें गुजर जाती हैं और "सभी चीजें नई हो गई हैं।"

15. 269 : 11-20

तत्त्वमीमांसा भौतिकी से ऊपर है, और सामग्री आध्यात्मिक परिसर या निष्कर्ष में प्रवेश नहीं करती है। तत्त्वमीमांसा की श्रेणियां एक आधार पर हैं, दिव्य मन। तत्त्वमीमांसा चीजों को विचारों में बदल देता है, और आत्मा के विचारों के लिए अर्थ की वस्तुओं का आदान-प्रदान करता है।

ये विचार आध्यात्मिक चेतना के बिल्कुल वास्तविक और मूर्त हैं, और भौतिक लाभ की वस्तुओं और विचारों पर उनका यह लाभ है - वे अच्छे और शाश्वत हैं।

16. 261 : 2-7

सत्य और प्रेम में शरीर से दूर देखो, सभी खुशी, सद्भाव और अमरता का सिद्धांत। धीरज, अच्छे और सच्चे विचार को दृढ़ता से पकड़ें, और आप अपने अनुभवों के अनुपात में इन्हें अपने अनुभव में लाएंगे।

17. 17 : 14-15

क्योंकि परमेश्वर अनंत है, सर्व-शक्ति है, सभी जीवन, सत्य, प्रेम, सभी पर शासक है, और सभी में है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6